जॉर्जिया ओ'कीफ़ी

लिंडा लोरी

चित्र: रोशेल ड्रेपर

जॉर्जिया ओ'कीफ़ी

लिंडा लोरी

चित्र: रोशेल ड्रेपर

न्यू मैक्सिको

अगस्त 1930

जॉर्जिया ओ'कीफ़ी ने हड्डी को ऊंचा उठाया.

उसने उसके बीच के छेद में से झाँका.

ऊपर न्यू मैक्सिको का अंतहीन नीला आकाश था.

नीचे नरम लाल रेगिस्तान था.

उसके लिए वो अब तक का सबसे खूबसूरत नजारा था.

जॉर्जिया की यात्रा लगभग समाप्त हो चुकी थी.

वो पेंट करने के लिए कुछ हड्डियों को, न्यूयॉर्क वापस ले जाने की सोच रही थीं.

वो अपने ऊपर मुस्कुराईं.

वो जब भी कुछ नया और अलग पेंट करती थीं, तो लोग भ्रमित होते थे.

कुछ लोग निश्चित रूप से हड्डियों को रंगने के लिए उन पर नाराज़ भी होंगे.

आखिर यह किसने सोचा था कि गाय की हड्डियों से खूबसूरत कलाकृतियां बन सकती थीं?

किसी ने भी नहीं.

लेकिन जॉर्जिया ने अक्सर ऐसी चीजें पेन्ट कीं, जिन्हें कभी किसी और ने पेन्ट करने के बारे में नहीं सोचा था.
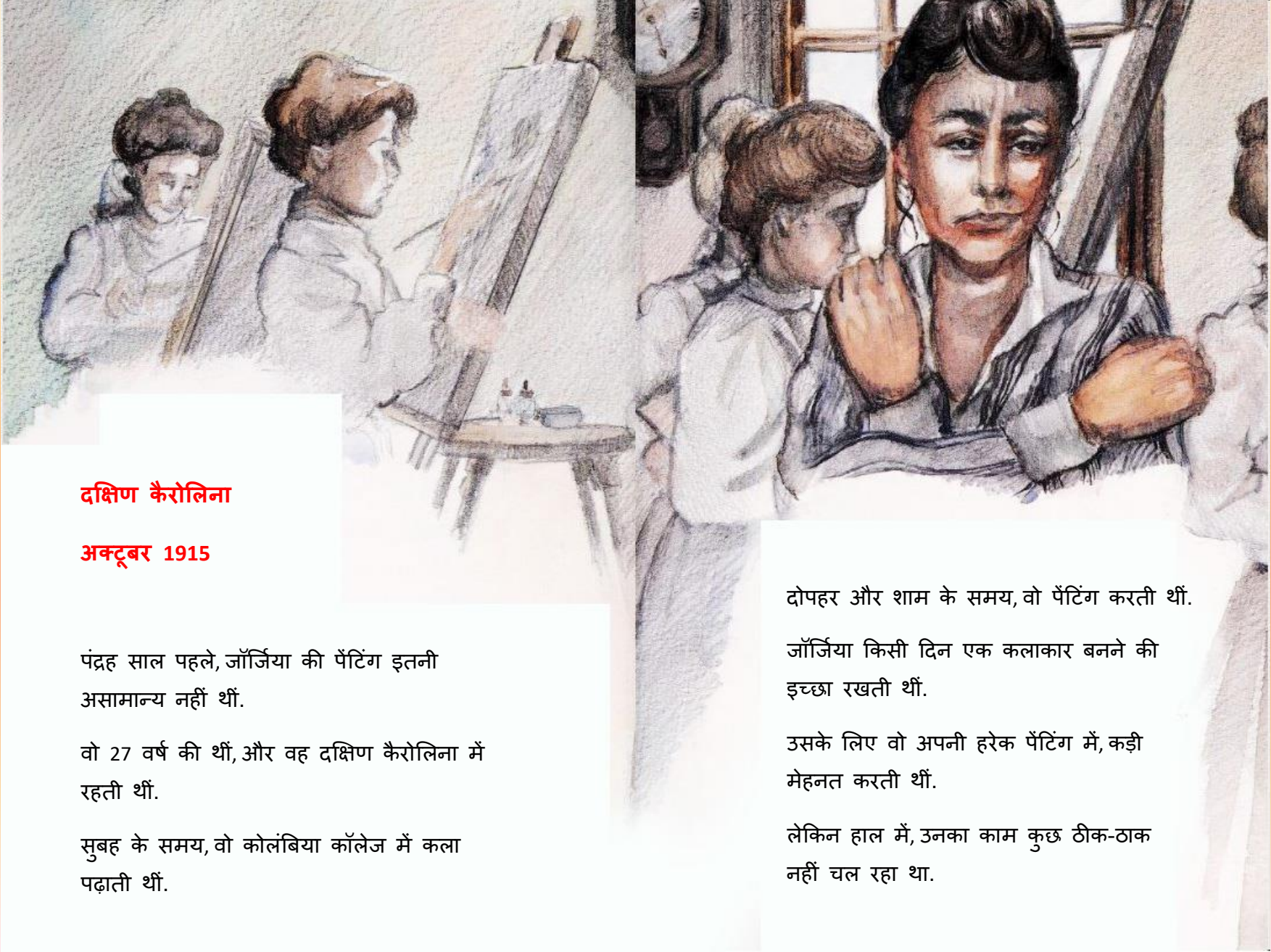
दक्षिण कैरोलिना

अक्टूबर 1915

पंद्रह साल पहले, जॉर्जिया की पेंटिंग इतनी असामान्य नहीं थीं.

वो 27 वर्ष की थीं, और वह दक्षिण कैरोलिना में रहती थीं.

सुबह के समय, वो कोलंबिया कॉलेज में कला पढ़ाती थीं.

दोपहर और शाम के समय, वो पेंटिंग करती थीं.

जॉर्जिया किसी दिन एक कलाकार बनने की इच्छा रखती थीं.

उसके लिए वो अपनी हरेक पेंटिंग में, कड़ी मेहनत करती थीं.

लेकिन हाल में, उनका काम कुछ ठीक-ठाक नहीं चल रहा था.

एक अक्टूबर के दिन, जॉर्जिया ने जंगल में एक लंबी सैर की.

फिर वो सीधे अपने स्टूडियो में चली गईं.

उन्होंने अपने पीछे दरवाजा बंद किया.

फिर उन्होंने अपने सभी चित्रों और कलाकृतियों को फैलाया.

और उन्होंने एक-एक को गौर से देखा.

उन्होंने देखा कि वो पेंटिंग्स किसी शिक्षक को खुश करने के लिए बनाई गई थीं.

एक पेन्टिंग उन्होंने एक कलाकार मित्र के लिए बनाई थी.

अन्य पेंटिंग्स प्रसिद्ध यूरोपीय कलाकारों के काम की तरह दिखती थीं.

एक भी पेंटिंग उनकी अपनी नहीं थी.

उन्हें यह पता नहीं था कि जॉर्जिया ओ'कीफ़ी की तरह उन्हें कैसी पेन्टिंग बनानी चाहिए.

अगर वो बिल्कुल अपने स्टाइल में पेंट करतीं, और किसी और की नक़ल नहीं करतीं, तो उनकी पेंटिंग कैसी दिखती?

क्या वो पेन्टिंग बहुत छोटी होती, और फिर उसे देखने के लिए लोगों को बहुत करीब आना होता?

क्या यह बहुत बड़ी होती, और उसकी चोटी तक पहुंचने के लिए एक सीढ़ी की आवश्यकता होती?

क्या उनकी पेन्टिंग में किसी फोटोग्राफ की तरह विस्तृत विवरण होता?

या वो अमूर्त, बोल्ड स्ट्रोक और रंगीन आकृतियों की बनी होती?

बहुत देर तक जॉर्जिया ने देखा और सोचा.

जब वो छोटी थीं, तब से उनके मन में आकृतियाँ तैरती थीं.

उन्होंने गोलाकार और लहरदार आकृतियाँ की कल्पना की थी.

ऐसी लंबी लाइनें जो मोटी होतीं, और फिर पतली होती जाती थीं.

ये आकृतियाँ ऐसी नहीं थीं जो उसने स्कूल में सीखी थीं.

वे आकृतियाँ सिर्फ उसकी कल्पना में थीं.

उसने उन्हें कागज पर उकेरने के बारे में कभी नहीं सोचा था.

वे उस प्रकार की आकृतियाँ नहीं थीं जिन्हें आम चित्रकार चित्रित करते थे.
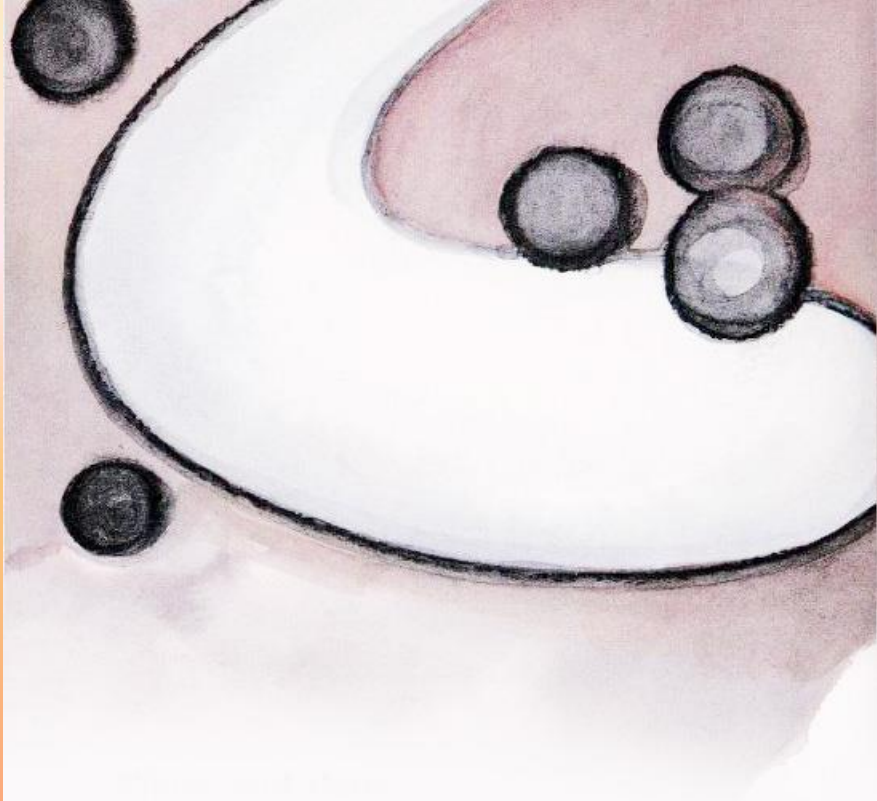
वहाँ और तभी, जॉर्जिया ने अपना मन बना लिया.

जो उसने देखीं थीं वो अजीब आकृतियाँ थीं, तो वो उन्हीं आकृतियों को, ठीक वैसे ही पेन्ट करेंगी.

जॉर्जिया ने अपनी सबसे अच्छी दोस्त, अनीता पोलित्ज़र को एक पत्र भेजा.

अनीता न्यूयॉर्क में रहती थीं.

"मैं पूरी तरह से एक नई शुरुआत कर रही हूं," उन्होंने लिखा.

जॉर्जिया ने अपने पुराने चित्रों को एक कोठरी में छिपा दिया.

उन्होंने अपने पेंट और अपने ब्रश भी संभाल कर रख दिए.

उन्होंने ड्राइंग के लिए बहुत बड़ा सफ़ेद कागज़ खरीदा.

उन्होंने काली चारकोल की छड़ें निकालीं.

फिर उन्होंने कोठरी के दरवाजे पर अपना कागज टेप किया और फर्श पर बैठ गयीं.

जॉर्जिया ने एक वक्र खींचा जो ऊंचा उठा, और फिर कागज़ की चोटी से गिर गया.

उन्होंने एक पतली रेखा खींची जो बीच में मोटी और फिर पतली हो गई.

वो आकाश में एक छेद जैसा लग रहा था.

उन्होंने नीचे घूमते हुए स्पाइरल बनाए.

उन्होंने लहरों को ऊपर की ओर बहते हुए खींचा.

एक रात, जॉर्जिया के सिर में तेज़ दर्द हुआ.

"अच्छा, मैं इस दर्द के साथ कुछ क्यों नहीं करती हूँ?" उन्होंने सोचा.

फिर उन्होंने एक ऐसी तस्वीर बनाई जिसने उनके सिर दर्द को दर्शाया.
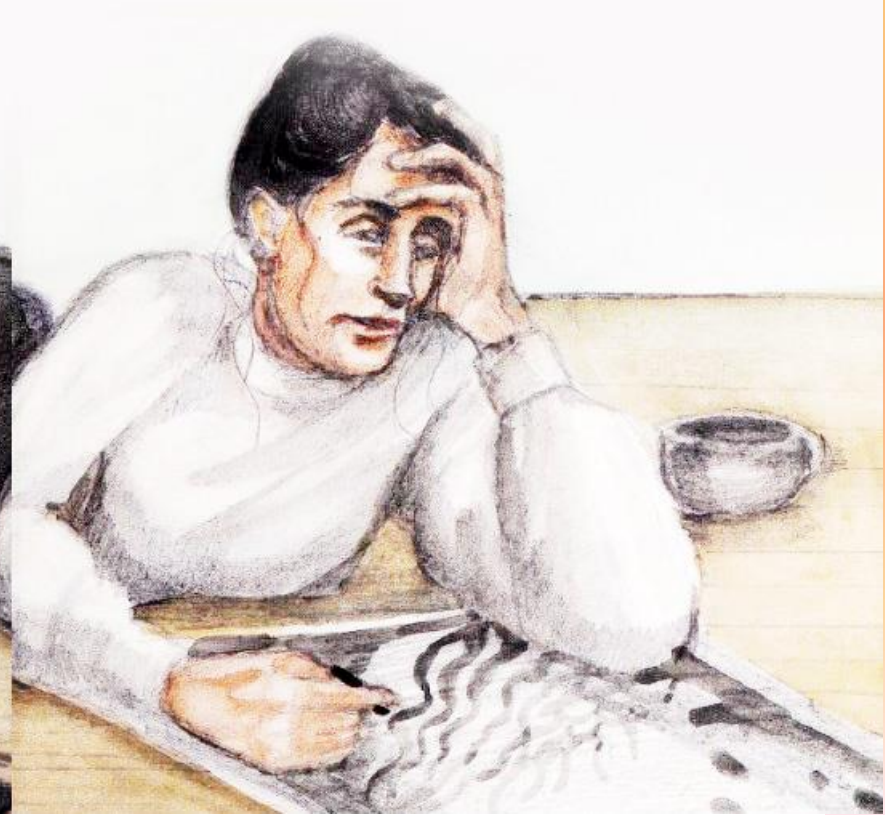
हर रात जॉर्जिया तब तक काम करती थीं जब तक कि उनके हाथ में लकड़ी का कोयला टूट नहीं जाता था.

उनकी उँगलियाँ इतनी दुखने लगी थीं कि वो अनीता को लिखने के लिए कलम तक नहीं पकड़ पाती थीं.

"क्या मैं पूरी तरह से पागल हो गई हूँ?" उन्होंने लिखा.

उन्हें लगता था कि उन अजीब आकृतियाँ को बनाने का मतलब था कि वो पागल हो गई थीं.

शायद उनकी पेन्टिंग्स में, कला बिल्कुल भी नहीं थी.

शायद वो अपने पागलपन में कुछ उल्टा-सीधा बना रही थीं.

"जो कर रही हो, उसे ज़ारी रखो," अनीता ने वापस लिखा.

एक बार क्रिसमस की छुट्टी में जॉर्जिया रात भर जागकर काम करती रहीं.

जब सूरज निकला, तो वह बिस्तर पर लेट गईं.

उनके पास अब बहुत सारे चित्र थे.

अब उन चित्रों को किसी अन्य को, दिखाने का समय आ गया था.

न्यूयॉर्क

जनवरी 1916

नए साल के दिन, 1916 में, अनीता को डाक में एक पैकेज मिला.

वो चित्रों का एक रोल था.

अनीता पैकेट को एक कमरे में ले गई और उसने अपना दरवाजा बंद कर लिया.

उसने अपने चारों ओर चित्र बिछाए.

उसकी दोस्त जॉर्जिया ने, कैसी निराली जंगली आकृतियां बनाई थीं!

वे कागज पर केवल काले निशान थे.

लेकिन वे कूदते, दुर्घटनाग्रस्त होते और बहते दिखते थे.

वे खुलकर फूट पड़े.

वे फैल गए.

अनीता को वो चित्र जीवांत लग रहे थे.

एक घंटे तक वह उन्हें निहारती रही.
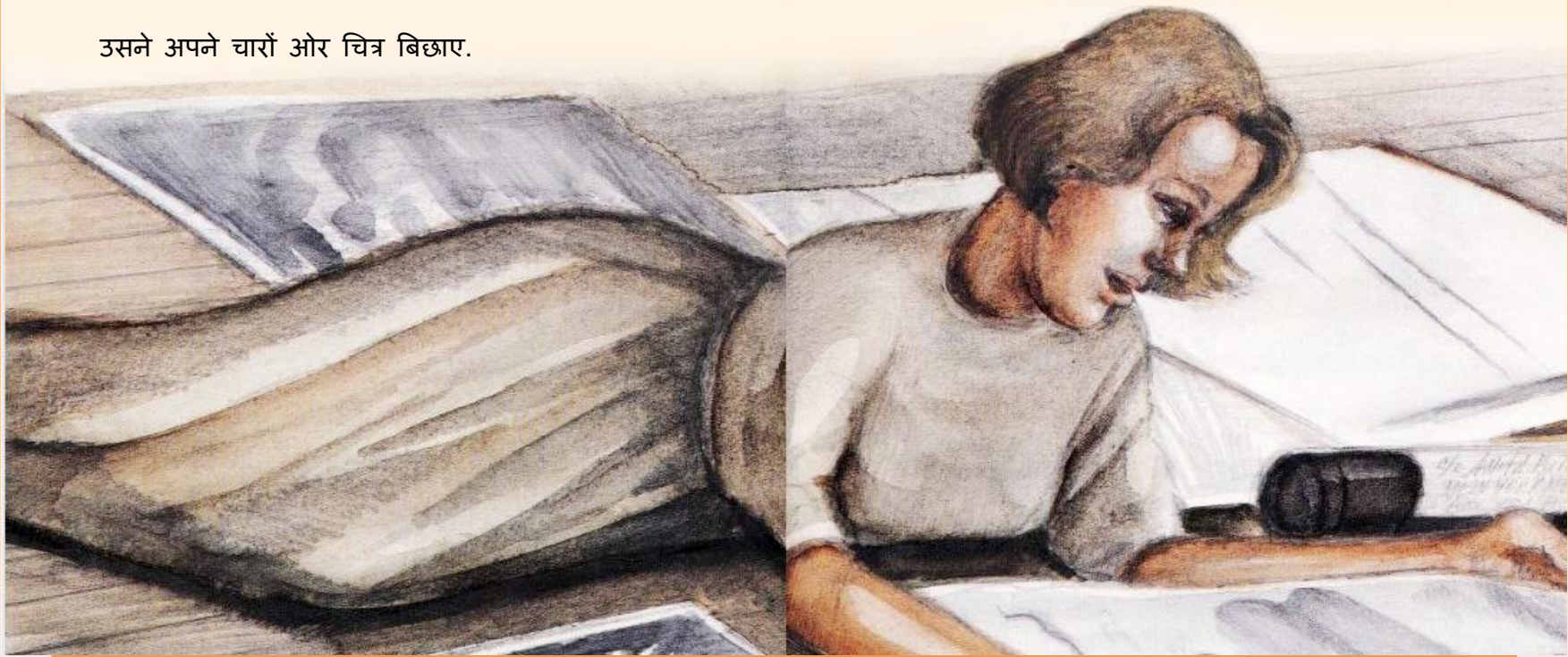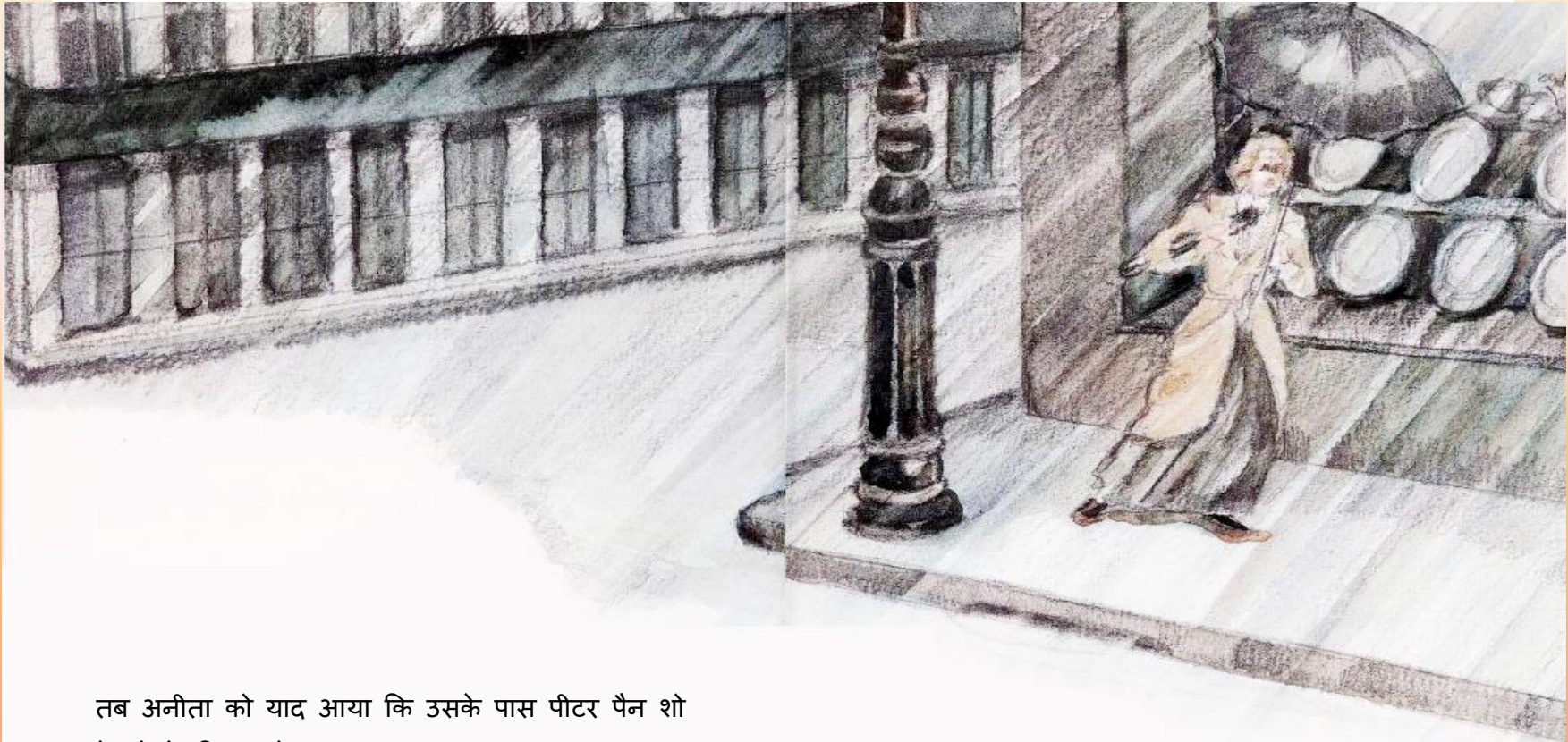
तब अनीता को याद आया कि उसके पास पीटर पैन शो देखने के टिकट थे.

वो जॉर्जिया के चित्रों के बिना वहां नहीं जाना चाहती थी.

फिर उसने चित्रों को अपनी बगल में दबाया और थियेटर में गयी.

पूरे नाटक के दौरान, उसने जॉर्जिया के चित्रों को अपने पास रखा.

जब अनीता ने थिएटर छोड़ा, तो वो अंधेरी, बरसाती गलियों से गुज़री.

वो सीधे अल्फ्रेड स्टिग्लिट्ज की गैलरी में गई.

अनीता और जॉर्जिया अपने सहपाठियों के साथ कई बार उस गैलरी में गए थे.

उन्होंने मिस्टर स्टिग्लिट्ज के साथ वहां लटकी तस्वीरों के बारे में लंबी, जीवंत चर्चाएं की थीं.

मिस्टर स्टिग्लिट्ज ने उन्हें पिकासो, मैटिस और रोडिन जैसे नए कलाकारों की आधुनिक कला दिखाई थी.

अनीता का दिल तेजी से धड़क रहा था.

वो मिस्टर स्टिग्लिट्ज़ से थोड़ा डरती थीं.

अपनी लंबी, काली टोपी और झाड़ीदार मूंछों के साथ वो बहुत ही नाटकीय थे.

कभी-कभी वो असभ्य भी हो सकते थे.

लेकिन क्या होगा अगर उन्हें वो चित्र पसंद आए?

उसका मतलब होगा कि जॉर्जिया का काम उतना ही अच्छा था जितना अनीता ने सोचा था.

अनीता ने लिफ्ट का बटन दबाया, लेकिन लिफ्ट खराब थी.

वो सीढ़ियाँ चढ़कर चौथी मंजिल पर गई, और वहां अचानक मिस्टर स्टिग्लिट्ज से टकरा गई.

अनीता ने उसकी मिस्टर स्टिग्लिट्ज के गुस्सैल चेहरे को अनदेखा किया.

उसे जॉर्जिया की खातिर वो करना पड़ा.

"क्या आप देखना चाहेंगे कि मेरे हाथ में क्या है?" अनीता ने पूछा.

मिस्टर स्टिग्लिट्ज़ ने उससे चित्रों को फर्श पर फैलाने को कहा.

फिर उन्होंने गोल, तार का चश्मा पहना.

फिर वो बहुत देर तक चुपचाप उन चित्रों को घूरते रहे.

अंत में, उन्होंने कहा.
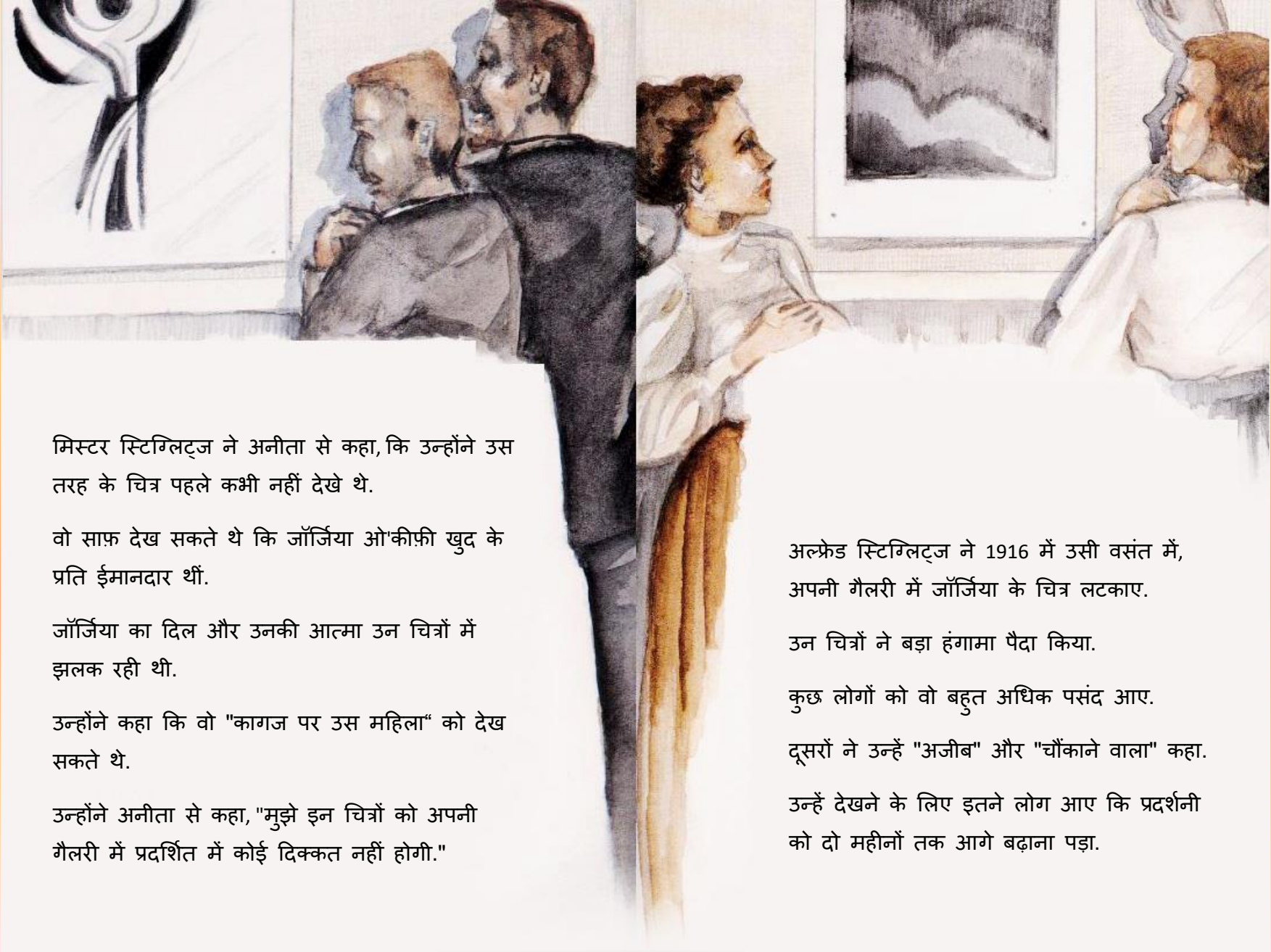
मिस्टर स्टिग्लिट्ज ने अनीता से कहा, कि उन्होंने उस तरह के चित्र पहले कभी नहीं देखे थे.

वो साफ़ देख सकते थे कि जॉर्जिया ओ'कीफ़ी खुद के प्रति ईमानदार थीं.

जॉर्जिया का दिल और उनकी आत्मा उन चित्रों में झलक रही थी.

उन्होंने कहा कि वो "कागज पर उस महिला“ को देख सकते थे.

उन्होंने अनीता से कहा, "मुझे इन चित्रों को अपनी गैलरी में प्रदर्शित में कोई दिक्कत नहीं होगी."

अल्फ्रेड स्टिग्लिट्ज ने 1916 में उसी वसंत में, अपनी गैलरी में जॉर्जिया के चित्र लटकाए.

उन चित्रों ने बड़ा हंगामा पैदा किया.

कुछ लोगों को वो बहुत अधिक पसंद आए.

दूसरों ने उन्हें "अजीब" और "चौंकाने वाला" कहा.

उन्हें देखने के लिए इतने लोग आए कि प्रदर्शनी को दो महीनों तक आगे बढ़ाना पड़ा.

जॉर्जिया उसके बाद अल्फ्रेड को अच्छी तरह से जानने लगीं.

अल्फ्रेड एक फोटोग्राफर थे, जो अपने कैमरे से खूबसूरत तस्वीरें खींचते थे.

जॉर्जिया और अल्फ्रेड अक्सर एक ही वस्तु की तस्वीरें बनाते थे.

1920 में, जॉर्जिया ने सेबों की पेंटिंग शुरू की.

"उसे सेब का बुखार चढ़ गया है," अल्फ्रेड ने समझाया.

अगले साल, अल्फ्रेड ने सेब की फोटो लीं.
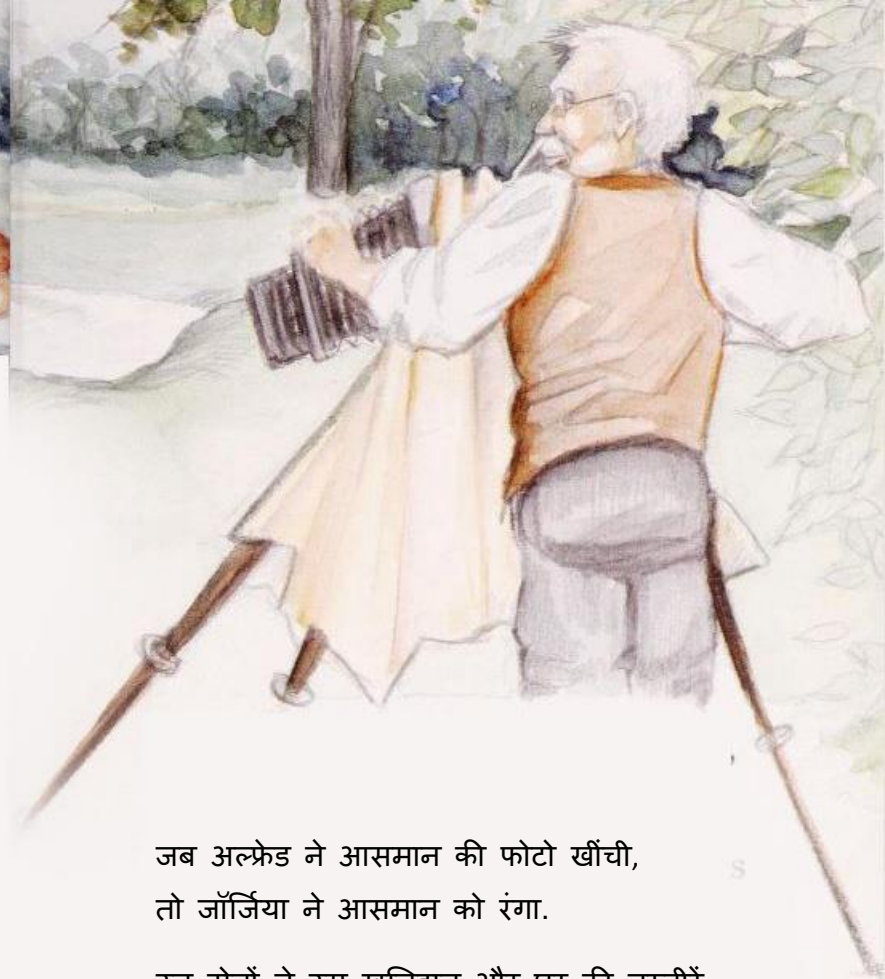
जब अल्फ्रेड ने आसमान की फोटो खींची,
तो जॉर्जिया ने आसमान को रंगा.

उन दोनों ने उस खलिहान और घर की तस्वीरें बनाईं, जहां उन्होंने अपना ग्रीष्मकाल बिताया था.

दोनों की मिलकर एक बेहतरीन टीम बनी और 1924 में उनका विवाह हो गया.

जॉर्जिया ने सैकड़ों अन्य चित्र बनाए.

उसने न्यूयॉर्क की ऊंची चमचमाती इमारतों के चित्र बनाए.
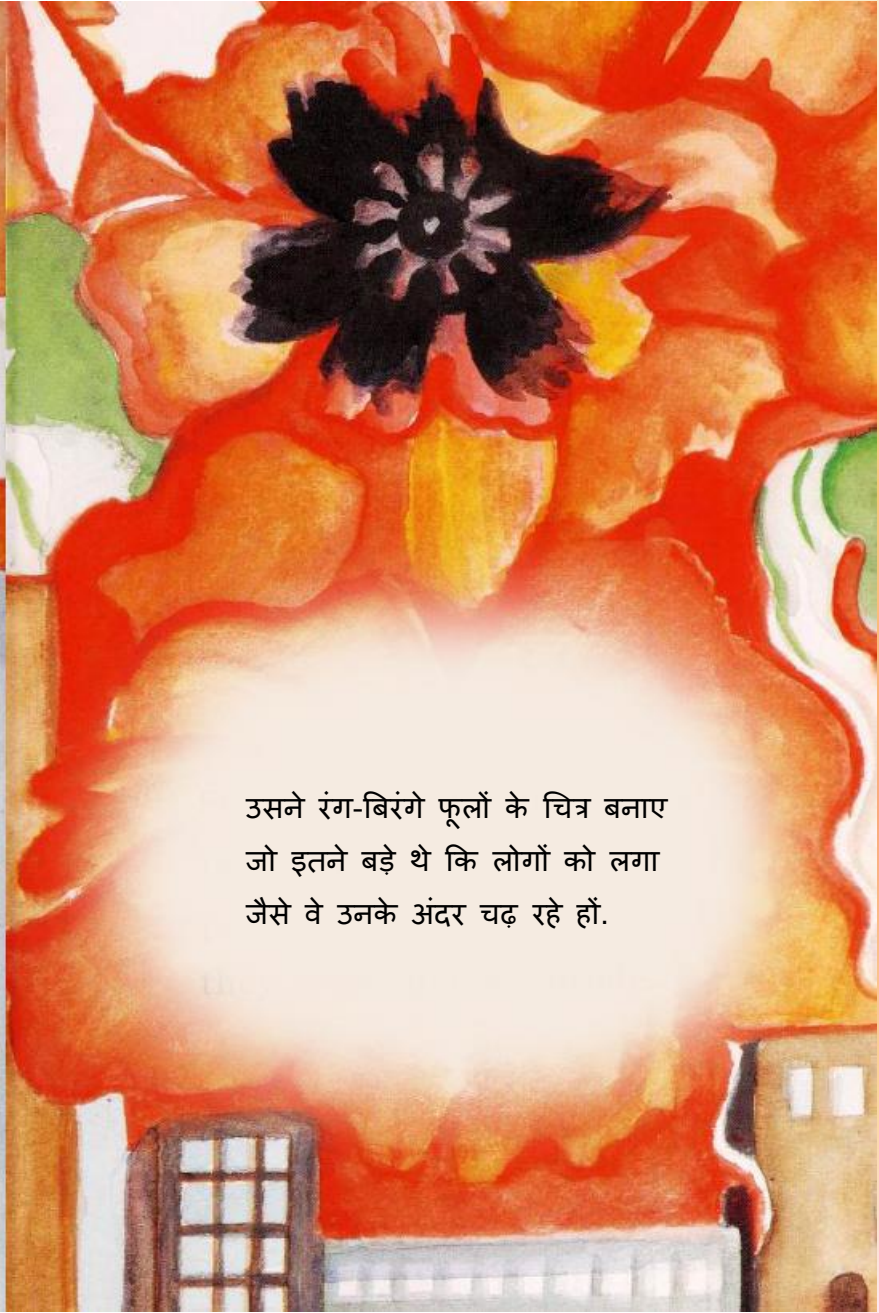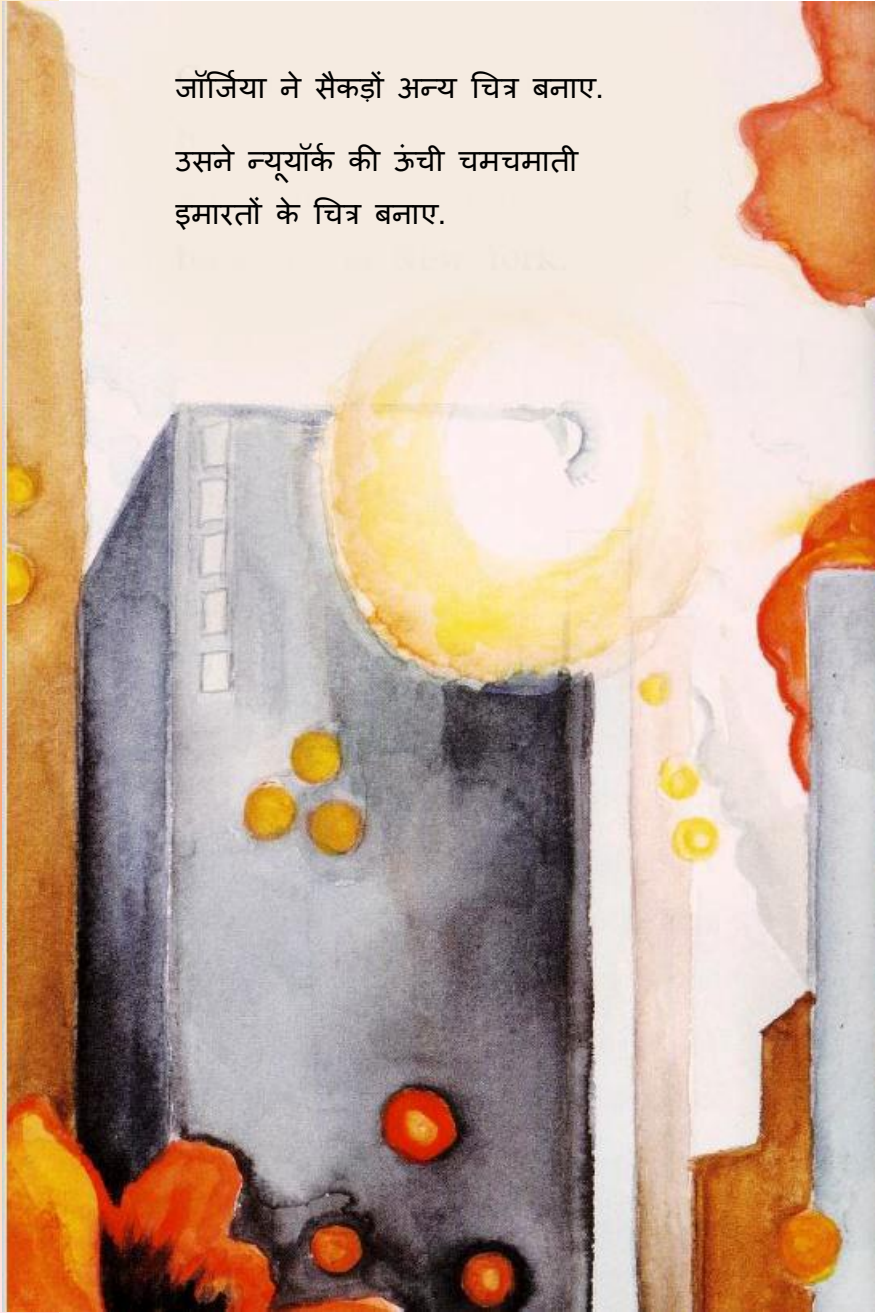
उसने रंग-बिरंगे फूलों के चित्र बनाए जो इतने बड़े थे कि लोगों को लगा जैसे वे उनके अंदर चढ़ रहे हों.

न्यू मैक्सिको

अगस्त 1930

जब वो न्यू मैक्सिको गई, तो जॉर्जिया ने हड्डियों को रंगने के बारे में सोचना शुरू किया.

उन्होंने अपने हाथ में उठाई हड्डी को बार-बार घुमाया.

उनके लिए, वो हड्डी कीमती था. "मैं रेगिस्तान को रंगना चाहती थी, पर मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वो मैं कैसे करूं," उन्होंने सोचा.
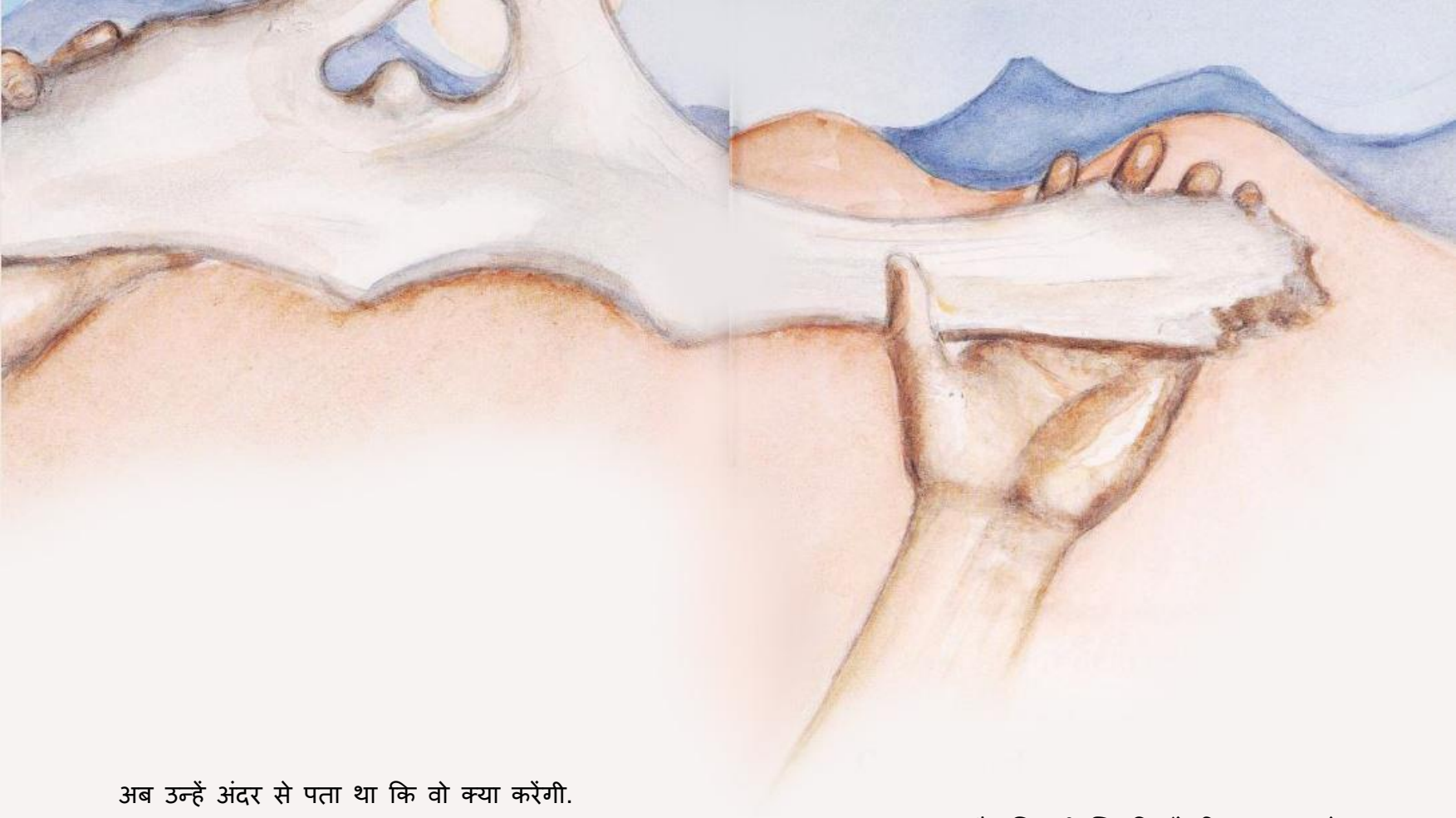
अब उन्हें अंदर से पता था कि वो क्या करेंगी.

सफेद हड्डियाँ और नीला आकाश.

सफेद हड्डियाँ और लाल पहाड़ियाँ.

सफेद हड्डियाँ और बादल.

घुमावदार और चिकनी, खिड़कियों की तरह खुलने वाली हड्डियों ने उन्हें आश्चर्य से भर दिया.

तो यह वही चीज़ थी जिसे उन्हें पेन्ट करना चाहिए.
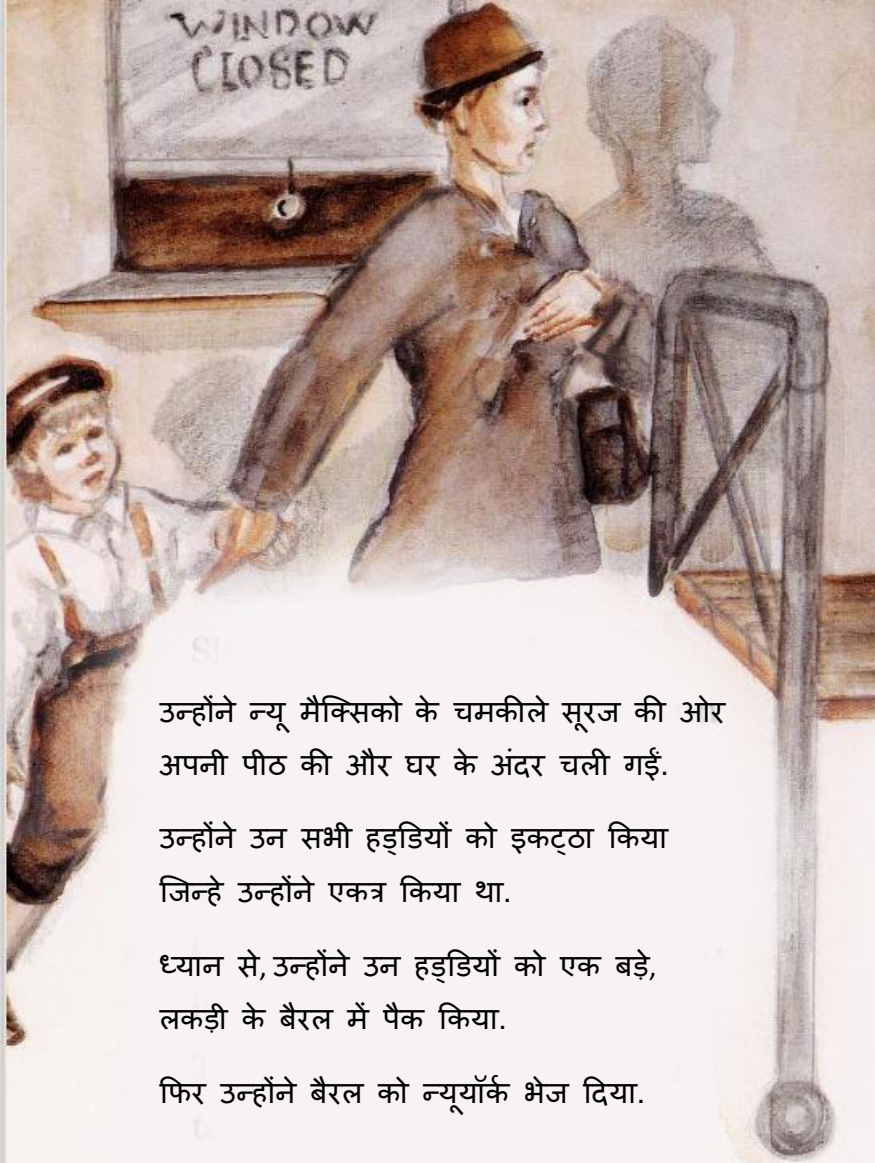
उन्होंने न्यू मैक्सिको के चमकीले सूरज की ओर अपनी पीठ की और घर के अंदर चली गईं.

उन्होंने उन सभी हड्डियों को इकट्ठा किया जिन्हे उन्होंने एकत्र किया था.

ध्यान से, उन्होंने उन हड्डियों को एक बड़े, लकड़ी के बैरल में पैक किया.

फिर उन्होंने बैरल को न्यूयॉर्क भेज दिया.
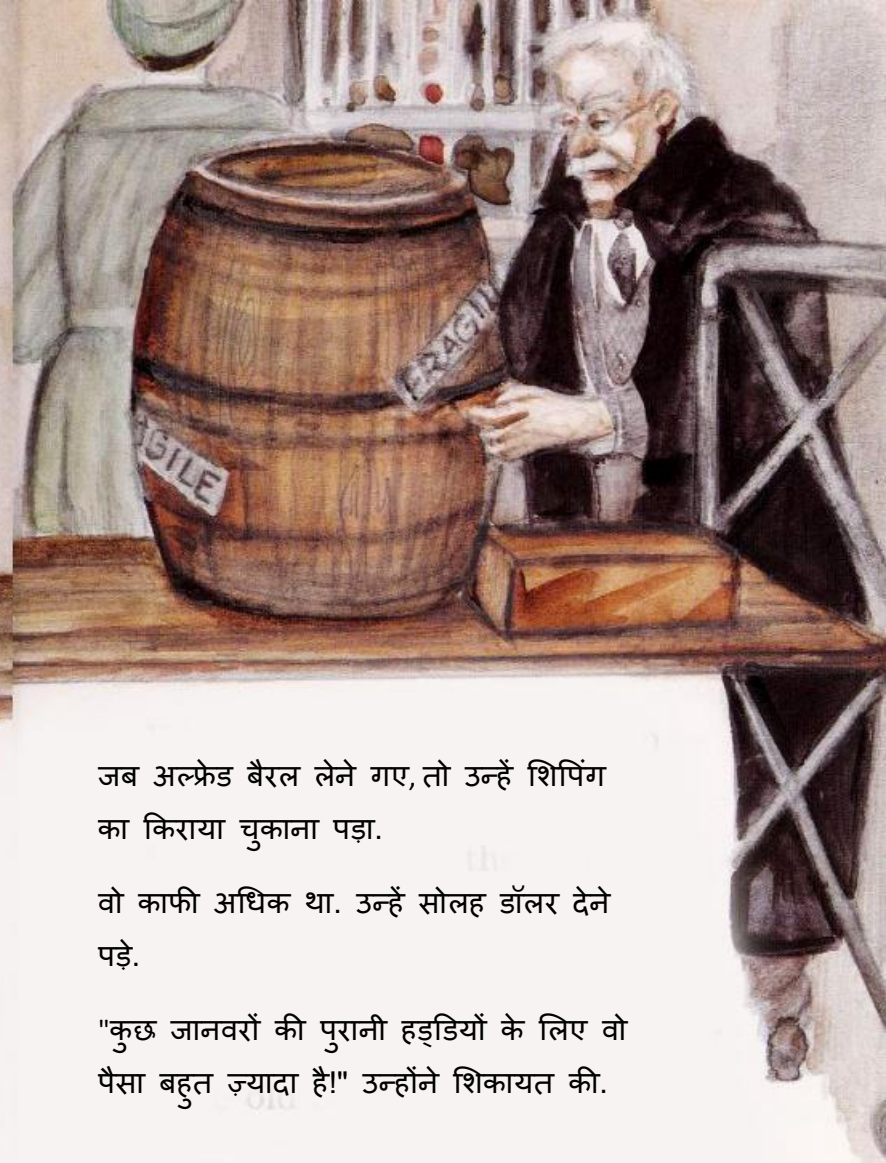
जब अल्फ्रेड बैरल लेने गए, तो उन्हें शिपिंग का किराया चुकाना पड़ा.

वो काफी अधिक था. उन्हें सोलह डॉलर देने पड़े.

"कुछ जानवरों की पुरानी हड्डियों के लिए वो पैसा बहुत ज़्यादा है!" उन्होंने शिकायत की.

जब जॉर्जिया वापस लौटीं और उन्होंने अल्फ्रेड को अपनी पहली हड्डी पेंटिंग दिखाई, तो वो हँसे.

"तुम इससे क्या हासिल करने की उम्मीद कर रही हो?" उन्होंने पूछा.

कुछ लोग अल्फ्रेड से सहमत थे.

उन्हें हड्डियों को रंगना एक डरावना विचार लगा.

लेकिन कई लोगों को वो पेंटिंग खूबसूरत लगीं.

उनके चित्र पत्रिकाओं में छपे.

उन्हें प्रसिद्ध संग्रहालयों को बेचा गया.

जॉर्जिया ने कई वर्षों तक हड्डियों को चित्रित किया.

और जब वो हड्डियों को पेंट करते-करते थक गईं, फिर उन्होंने क्या पेंट किया?

जॉर्जिया ओ'कीफ़ी ने वो पेन्ट किया, जिसने उन्हें प्रसन्न किया. बाकी दुनिया उनके बारे में क्या सोचती थी, उससे उन्हें कुछ फर्क नहीं पड़ता था.
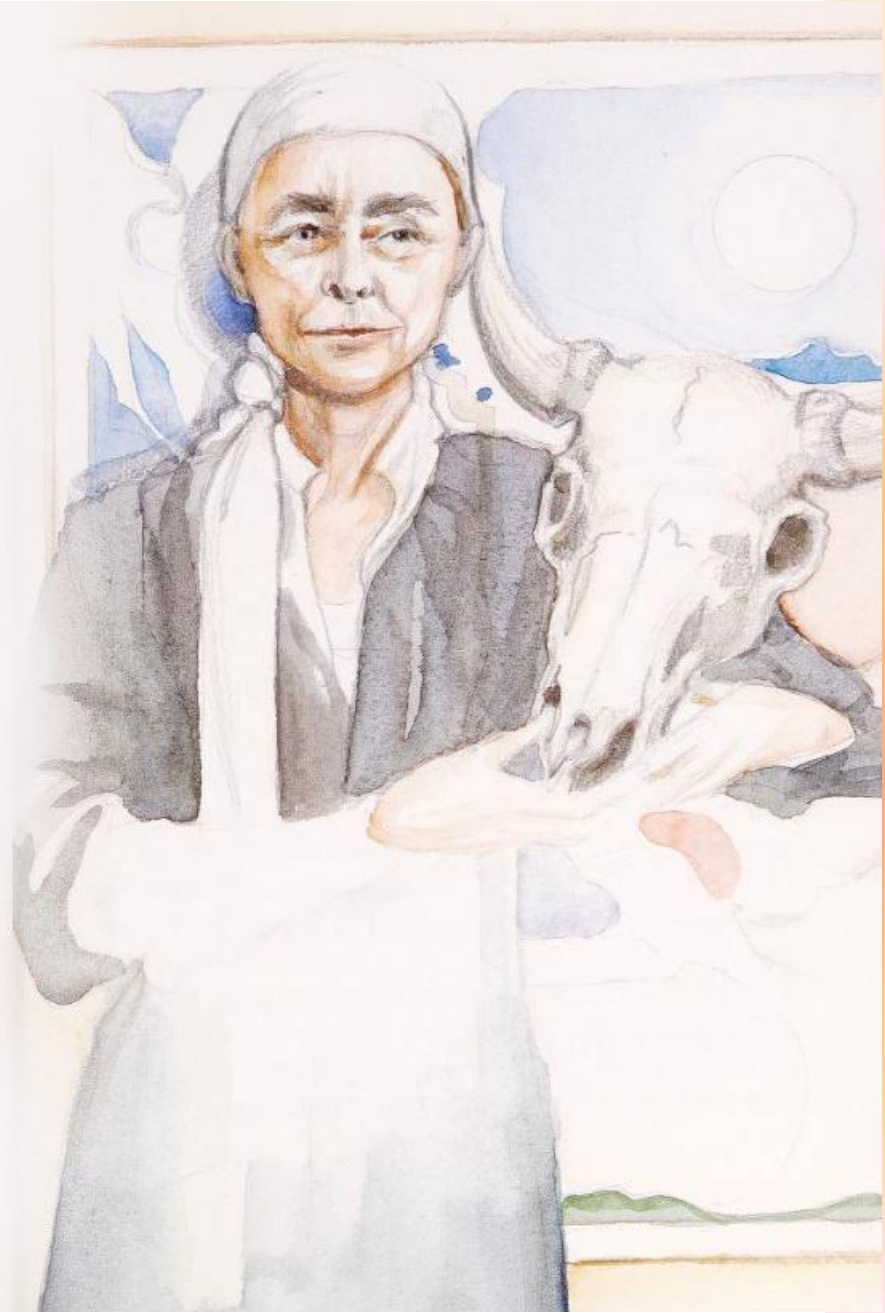
अंत के शब्द

1931 के बाद प्रत्येक वसंत में, जॉर्जिया पेंट के ट्यूब और कैनवास के रोल के साथ न्यूयॉर्क से निकलती थीं. वो अपनी चमकदार काली मॉडल-ए फोर्ड कार को न्यू मैक्सिको के रेगिस्तान में दौड़ाती थीं. जब उन्हें कोई एक ऐसा दृश्य मिलता जिसे देखकर वो खुश होतीं, तो फिर अपना सामान निकालतीं और उसे पेन्ट करतीं. हर सर्दियों में वो न्यूयॉर्क लौटकर आती थीं. तब उनकी कार अल्फ्रेड को और दुनिया को दिखाने के लिए चित्रों से भरी होती थी.

1946 में अल्फ्रेड की मृत्यु हो गई, और जॉर्जिया अबिकियू (एबी-ए-क्यू), न्यू मैक्सिको चली गईं. उनके लिए, वो दुनिया की 14वीं सबसे अद्भुत जगह थी. संग्रहालयों ने उनकी पेन्टिंग्स खरीदीं और उन्होंने अपने काम के लिए कई पुरस्कार जीते.

98 साल की उम्र तक, जॉर्जिया जो कुछ देखतीं, उसे ठीक उसी तरह से पेन्ट करती रहीं. उन्हें उससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि बाकी लोग उनकी पेन्टिंग्स के बारे में क्या सोचता थे. प्रत्येक पेन्टिंग उनकी अपनी थी - जॉर्जिया ओ'कीफ़ी की एक नायाब कलाकृति!.

महत्वपूर्ण तिथियाँ

15 नवंबर, 1887—सन प्रेयरी, विस्कॉन्सिन में जन्म

1902—परिवार विलियम्सबर्ग, वर्जीनिया चला गया

1905-1908—शिकागो और न्यू यॉर्क में कला का अध्ययन

1916—अल्फ्रेड स्टिग्लिट्ज की 291 गैलरी में, पहली बड़ी प्रदर्शनी

1918—पूरे समय पेंटिंग करना शुरू किया; न्यूयॉर्क चली गईं

1918-1932— अधिकांश फूल पेंटिंग बनाईं

1924 - अल्फ्रेड स्टिग्लिट्ज से शादी

1929- ताओस, न्यू मैक्सिको में पहली गर्मी

1930- हड्डियों को रंगना शुरू किया

1946—अल्फ्रेड की मृत्यु

1949—स्थायी रूप से अबिकियू, न्यू मैक्सिको में बस गईं

1977—अमेरिकी सरकार के स्वतंत्रता पदक से सम्मानित

1985—कला के राष्ट्रीय पदक से सम्मानित

6 मार्च 1986 को, 98 वर्ष की आयु में सांता फ़े, न्यू मैक्सिको में मृत्यु